



KHAN GLOBAL STUDIES

KGS Campus, Sai Mandir, Musallahpur Hatt, Patna-6

Mob : 8877918018, 875735880

जनसांख्यिकीय लाभांश

By : Ajit Sir

जनसांख्यिकीय लाभांश क्या है?

❖ **जनसांख्यिकीय लाभांश का अर्थ:** संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष (यूनाइटेड नेशंस पॉपुलेशन फंड / यूएनएफपीए) जनसांख्यिकीय लाभांश को आर्थिक विकास की क्षमता के रूप में परिभाषित करता है जो जनसंख्या की आयु संरचना में परिवर्तन के परिणामस्वरूप हो सकता है।

❖ अनेक रिपोर्टों के अनुसार काल प्रभावन वाली दुनिया में, भारत में सर्वाधिक युवा जनसंख्या (15-59 आयु वर्ग में इसकी आबादी का 62.5%) है।

जनसांख्यिकीय लाभांश के लाभ एवं अवसर

❖ **श्रम आपूर्ति:** बढ़ी हुई श्रम आपूर्ति युवा जनसंख्या का प्रत्यक्ष लाभ है, क्योंकि अधिक संख्या में लोग कार्यशील आयु तक पहुंचते हैं। यद्यपि, इस लाभ का परिमाण इन अतिरिक्त श्रमिकों को नियोजित करने के लिए अर्थव्यवस्था की क्षमता पर निर्भर करेगा।

❖ **पूंजी निर्माण:** जैसे-जैसे परिवार में आश्रितों की संख्या घटती जाती है, व्यक्ति अधिक बचत करते हैं। राष्ट्रीय बचत दरों में यह वृद्धि विकासशील देशों में पूंजी स्टॉक में वृद्धि करती है, इसके अतिरिक्त निवेश के माध्यम से देश की पूंजी के सृजन का अवसर प्रदान करती है।

❖ **महिला मानव पूंजी :** प्रजनन दर में कमी के परिणामस्वरूप महिलाएं स्वस्थ होती हैं एवं घर पर आर्थिक दबाव कम होता है। यह बदले में, कार्यबल में अधिक महिलाओं को सम्मिलित करने का अवसर प्रदान करता है।

❖ **आर्थिक विकास :** युवा आबादी के बाहुल्य का अर्थ है मांग संचालित आर्थिक विकास। विकास, शिक्षा, बेहतर आर्थिक सुरक्षा एवं अधिक टिकाऊ वस्तुओं की इच्छा युवा जनसांख्यिकी के कारण तथा परिणाम है।

❖ **आधारिक अवसंरचना:** जनसांख्यिकीय लाभांश द्वारा निर्मित राजकोषीय स्थान में वृद्धि सरकार को उपभोग पर कम निवेश पर अधिक व्यय करने में सक्षम बनाती है।

जनसांख्यिकीय लाभांश तथा भारत

❖ **मानव पूंजी में वृद्धि:** भारत के स्नातकों एवं स्नातकोत्तरों के मध्य नियोजनीयता अत्यंत कम है। एसोचौम के एक अध्ययन के अनुसार, केवल 20-30% इंजीनियरों को ही उनके कौशल के अनुसार नौकरी मिलती है। भारत में बेरोजगारी एवं अल्प रोजगार दोनों के मुद्दे हैं।

❖ **निम्न मानव विकास:** यूएनडीपी के मानव विकास सूचकांक में भारत 189 देशों में 130वें स्थान पर है। भारत में जन्म के समय जीवन प्रत्याशा (68 वर्ष) जैसे बुनियादी संकेतक भी अन्य

विकासशील देशों की तुलना में बहुत कम है।

❖ **अनौपचारिक अर्थव्यवस्था:** भारत में अर्थव्यवस्था की अनौपचारिक प्रकृति भारत में जनसांख्यिकीय संक्रमण के लाभों को प्राप्त करने में एक अन्य चुनौती है। अधिकांश भारतीय कार्यबल असंगठित क्षेत्र में कार्यरत है जहां न केवल उन्हें कम वेतन प्राप्त होता है, बल्कि उन्हें सामाजिक सुरक्षा की महत्वहीन परिस्थितियों में भी रहना पड़ता है।

❖ **रोजगार विहीन वृद्धि:** अर्थव्यवस्था में वृद्धि कुल रोजगार में परिलक्षित नहीं होती है। एनएसएसओ (नेशनल सैंपल सर्वे ऑर्गेनाइजेशन / राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण संगठन) के आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण 2017-18 के अनुसार, 15-59 वर्ष के आयु वर्ग के लिए भारत की श्रम शक्ति भागीदारी दर लगभग 53% थी, जिसका अर्थ है कि लगभग 50% कार्यबल बेरोजगार है।

❖ **आनत लिंगानुपात का मुद्दा:** अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (इंटरनेशनल लेबर ऑर्गेनाइजेशन/आईएलओ) एवं विश्व बैंक के अनुसार, भारत की महिला श्रम शक्ति भागीदारी दर 1990 में 34.8% से गिरकर 2013 में 27% हो गई है। महिलाओं की भागीदारी के बिना, भारत जनसांख्यिकीय लाभांश प्राप्त करने का स्वप्न नहीं देख सकता है।

जनसांख्यिकीय लाभांश तथा आर्थिक विकास

आवश्यक कार्य

❖ **मानव पूंजी का निर्माण:** भारत को प्राथमिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा एवं व्यावसायिक प्रशिक्षण तक सभी स्तरों पर मानव पूंजी निर्माण में अधिक निवेश करना होगा। इसकी वृद्धिमान कार्यशील आयु की जनसंख्या के कौशल समुच्चय में वृद्धि करने हेतु नवाचार एवं अनुसंधान तथा विकास किया जाना चाहिए।

❖ **कौशल विकास:** युवा आबादी की नियोजनीयता में वृद्धि करने हेतु कौशल विकास अत्यावश्यक है। भारत के युवाओं को कौशल विकास प्रदान करने हेतु सरकार ने 2014 में स्किल इंडिया मिशन की शुरुआत की थी। राष्ट्रीय कौशल विकास निगम (नेशनल स्किल डेवलपमेंट कॉरपोरेशन / एनएसडीसी) की स्थापना 2022 तक भारत में 500 मिलियन लोगों को कौशल / कौशल उन्नयन के समग्र लक्ष्य के साथ युवा आबादी को कौशल प्रदान करने के लिए की गई थी।

❖ **शिक्षा :** शिक्षा का प्रत्येक स्तर पर संवर्धन आवश्यक है। जनसांख्यिकीय लाभांश का लाभ प्राप्त करने हेतु, शिक्षा पर निवेश को जीडीपी के 6% तक बढ़ाना चाहिए जैसा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 सहित अनेक समितियों तथा नीतियों द्वारा अनुशंसित है।

- ❖ **स्वास्थ्य:** स्वास्थ्य सेवा सामाजिक बुनियादी ढांचे का एक महत्वपूर्ण खंड है। भारत के स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र को सुदृढ़ करने हेतु राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति, 2017 द्वारा अनुशंसित क्षेत्र में सकल घरेलू उत्पाद का 2.5% निवेश किया जाना चाहिए। स्वास्थ्य सेवा के बुनियादी ढांचे में सुधार से युवा श्रम बल के लिए अधिक संख्या में उत्पादक दिन सुनिश्चित होंगे, एवं इस प्रकार अर्थव्यवस्था की उत्पादकता में वृद्धि होगी।
 - ❖ **रोजगार सृजन:** अतिरिक्त युवाओं को कार्यबल में समाहित करने हेतु हमें प्रति वर्ष दस मिलियन रोजगार सृजित करने की आवश्यकता है। औपचारिक नौकरियों की संख्या में, विशेष रूप से श्रम प्रधान क्षेत्रों तथा निर्यातमुखी क्षेत्रों में उल्लेखनीय वृद्धि करने की आवश्यकता है।
 - ❖ **सुशासन:** सुशासन विकास के लिए एक पूर्वापेक्षा है। सुचारू रूप से कार्य करने वाली संस्थाओं वाला देश विधि के शासन के प्रति सम्मान, भ्रष्टाचार का निम्न स्तर, संपत्ति के अधिकारों का सम्मान, अनुबंधों की पवित्रता इत्यादि सभी को समान अवसर प्रदान करने हेतु पूर्वनिर्दिष्ट है।
- भारत के जनसांख्यिकीय लाभांश का क्या महत्त्व है?**
- ❖ धारणा यह है कि एक बड़ी युवा आबादी का अर्थ है अधिक मानव पूंजी, अधिक आर्थिक प और बेहतर जीवन स्तर।
 - ❖ कामकाजी आयु के लोगों की उच्च आबादी और कम आश्रित आबादी के कारण बढ़ी हुई आर्थिक गतिविधियों से बेहतर आर्थिक विकास की स्थिति बनती है।
 - ❖ पिछले सात दशकों में कामकाजी आयु की आबादी की हिस्सेदारी 50% से बढ़कर 65% हो गई है, जिसके परिणामस्वरूप निर्भरता अनुपात (कामकाजी आयु आबादी में बच्चों और वृद्ध जनों की संख्या) में उल्लेखनीय गिरावट आई है।
 - ❖ विश्व जनसंख्या परिप्रेक्ष्य 2022 के अनुसार, भारत के पास विश्व स्तर पर सबसे बड़ा कार्यबल होगा।
 - ❖ अगले 25 वर्षों में प्रत्येक पाँच कामकाजी आयु वर्ग के व्यक्तियों में से एक भारत में रह रहा होगा।
- भारत के जनसांख्यिकीय लाभांश से संबंधित प्रमुख चुनौतियाँ**
- ❖ **महिला श्रम बल भागीदारी का निम्न स्तर:** भारत की श्रम शक्ति कार्यबल में महिलाओं की अनुपस्थिति की बाधा से ग्रस्त है। आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण 2018-19 के अनुसार भारत में 15 वर्ष से अधिक आयु की महिलाओं में महिला श्रम बल भागीदारी दर (LFPR) की स्थिति ग्रामीण क्षेत्रों में 26.4% और शहरी क्षेत्रों में 20.4% तक के निम्न स्तर पर है।
 - ❖ **उच्च 'ड्रॉपआउट' दर:** जबकि भारत के 95% से अधिक बच्चे प्राथमिक स्कूल में नामांकित होते हैं, राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (NFHS) पुष्टि करते हैं कि सरकारी स्कूलों में बदतर बुनियादी ढांचे प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी और बाल कुपोषण ने बदतर 'लर्निंग आउटकम' और ड्रॉपआउट अनुपात में वृद्धि जैसे परिणाम दिये हैं।
 - ❖ **जनसांख्यिकीय लाभांश खिड़की में असमानता:** भारतीय जनसंख्या की विषमता के कारण विभिन्न राज्यों में जनसांख्यिकीय लाभांश की खिड़की अलग-अलग है। केरल की आबादी पहले ही वृद्ध हो रही है। जबकि बिहार के कार्यबल में वर्ष 2051 तक वृद्धि होने का अनुमान है।
- ❖ वर्ष 2031 तक 22 प्रमुख राज्यों में से 11 में कामकाजी आयु वर्ग की आबादी कम होगी।
 - ❖ रोजगारहीन विकास: (Deindustrialization), विऔद्योगीकरण वि-वैश्वीकरण (Deglobalization) और चतुर्थ औद्योगिक क्रांति (Industrial Revolution 4.0) के आलोक में इस बात की चिंता बढ़ रही है कि भविष्य का विकास रोजगारहीनता के साथ घटित होगा।
 - ❖ आर्थिक सर्वेक्षण 2019 कामकाजी आयु आबादी में अनुमानित वार्षिक वृद्धि और उपलब्ध नौकरियों की संख्या के बीच के अंतराल को उजागर करता है।
 - ❖ भारत में अर्थव्यवस्था की अनौपचारिक प्रकृति भारत में जनसांख्यिकीय संक्रमण के लाभों को प्राप्त करने के मार्ग में एक और बाधा है।
- जनसांख्यिकीय लाभांश के कारण (Reasons for demographic dividend)**
- ❖ जनसांख्यिकीय लाभांश के मुख्य कारण इस प्रकार हैं—
 - ❖ प्रजनन क्षमता में गिरावट जनसांख्यिकीय लाभांश का प्राथमिक चालक है।
 - ❖ तेजी से शहरी विस्तार शुरू में प्रवासन से प्रेरित था।
 - ❖ जनसांख्यिकीय लाभांश बढ़ा हुआ आर्थिक विकास है जो किसी देश की जन्म और मृत्यु दर में गिरावट और जनसंख्या की आयु संरचना में बदलाव के परिणामस्वरूप हो सकता है।
 - ❖ मानव पूंजी की मांग में वृद्धि और लैंगिक वेतन अंतर को कम करने पर इसके प्रभाव ने जनसांख्यिकीय संक्रमण की शुरुआत की।
 - ❖ प्रत्येक वर्ष कम जन्मों के साथ, एक देश की युवा निर्भर आबादी इसकी कामकाजी उम्र की आबादी की तुलना में गिरती है।
 - ❖ जनसांख्यिकीय बदलाव अर्थव्यवस्था की अंतर्निहित विकास दर, संरचनात्मक उत्पादकता वृद्धि, जीवन स्तर, बचत दर, खपत और निवेश को प्रभावित कर सकता है।
- भारत में जनसांख्यिकीय लाभांश से संबंधित अवसर**
- ❖ **आर्थिक विकास:** प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि और निर्भरता अनुपात में गिरावट के परिणामस्वरूप घरेलू मांग में वृद्धि एक और अवसर पैदा करती है। नतीजतन, मांग-संचालित आर्थिक विकास होता है। युवा जनसांख्यिकी विकास, शिक्षा, बेहतर आर्थिक सुरक्षा और अधिक टिकाऊ वस्तुओं की आवश्यकता का स्रोत और परिणाम है।
 - ❖ **इन्फ्रास्ट्रक्चर:** सरकार बच्चों पर खर्च करने से लेकर भौतिक और मानव बुनियादी ढांचे में निवेश करने के लिए संसाधनों को पुनर्निर्देशित कर सकती है। जनसांख्यिकीय लाभांश (Demographic Dividend in Hindi) द्वारा प्रस्तावित वित्तीय स्थान में वृद्धि के लिए धन्यवाद।
 - ❖ बढ़ी हुई श्रम आपूर्ति युवा आबादी का पहला लाभ है, क्योंकि अधिक लोग कामकाजी उम्र में प्रवेश करते हैं। हालांकि, इस लाभ का आकार अर्थव्यवस्था की अतिरिक्त कर्मचारियों को अवशोषित करने और उत्पादक रूप से नियोजित करने की क्षमता पर निर्भर है।

- ❖ **पूंजी का निर्माण:** आश्रितों की संख्या कम होने पर व्यक्ति अधिक धन की बचत करते हैं। राष्ट्रीय बचत दरों में यह वृद्धि विकासशील देशों में पूंजी के पूल का विस्तार करती है और निवेशकों को पूंजी का उत्पादन करने का मौका देती है।
- ❖ **महिला मानव पूंजी :** कम प्रजनन दर से महिलाएं स्वस्थ होती हैं और घरेलू आर्थिक तनाव कम होता है। यह मानव पूंजी में सुधार करते हुए कार्यबल में महिलाओं की संख्या में वृद्धि करने का अवसर प्रदान करता है।
- ❖ **प्रवासन:** यह विभिन्न अवसरों को प्रस्तुत करता है जो कुछ क्षेत्रों में श्रम की कमी को कम करने के लिए जनसांख्यिकीय लाभांश (Demographic Dividend in Hindi) और अंतरराज्यीय प्रवास सहित जनसांख्यिकीय बदलाव के परिणामस्वरूप उत्पन्न हो सकते हैं।
- ❖ भारतीय अर्थव्यवस्था के अधिकांश क्षेत्रों को वर्तमान की तुलना में उच्च प्रशिक्षित कार्यबल से लाभ होगा। भारत के कामगारों को देश की आर्थिक प्रगति में महत्वपूर्ण योगदान देने के लिए आवश्यक कौशल सेट और ज्ञान प्रदान करना एक समस्या और अवसर दोनों होगा।
- जनसांख्यिकीय लाभांश के लाभ**
- ❖ अधिक कामकाजी उम्र की आबादी की बढ़ती आर्थिक गतिविधियों और आश्रित आबादी पर कम खर्च के परिणामस्वरूप आर्थिक विकास में वृद्धि।
- ❖ श्रम शक्ति की उत्पादकता में वृद्धि से अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिलता है। भविष्य के दशकों में भारत का पूरा कार्यबल एशिया के आधे से अधिक संभावित कार्यबल की आपूर्ति करने में सक्षम होगा।
- ❖ जनसांख्यिकीय लाभांश (Demographic Dividend in Hindi) के कारण बढ़ी हुई राजकोषीय स्वतंत्रता बच्चों और बुजुर्गों के लिए लक्षित संसाधनों को मानव पूंजी और बुनियादी ढांचे की ओर मोड़ने की अनुमति देती है।
- ❖ कम प्रजनन दर के कारण महिलाओं के रोजगार में वृद्धि से आर्थिक विकास में वृद्धि होती है।
- ❖ ऐतिहासिक रूप से, जनसांख्यिकीय लाभांश (Demographic Dividend in Hindi) ने औद्योगिक अर्थव्यवस्थाओं में समग्र विकास में लगभग 15% का योगदान दिया है।
- ❖ नौकरी चाहने वालों की संख्या में वृद्धि के परिणामस्वरूप तेजी से औद्योगिकीकरण और शहरीकरण। यह देश को अपनी आर्थिक गतिविधियों को बढ़ाने के लिए प्रेरित करेगा।
- ❖ जब जनसंख्या की गतिशीलता को योजनाओं और कार्यक्रमों के नियोजन और कार्यान्वयन में शामिल किया जाता है, तो सामाजिक-आर्थिक प्रभाव और व्यक्तियों को लाभ अधिक होने की संभावना है।
- भारत में जनसांख्यिकीय लाभांश से जुड़ी चुनौतियाँ**
- ❖ असममित जनसांख्यिकीय कामकाजी उम्र की आबादी में वृद्धि भारत के कुछ सबसे गरीब राज्यों में केंद्रित होने का अनुमान है, और जनसांख्यिकीय लाभांश (Demographic Dividend in Hindi) पूरी तरह से तभी प्राप्त होगा जब भारत इन लोगों के लिए लाभकारी रोजगार के अवसर स्थापित कर सकता है।
- ❖ **विषम लिंग अनुपात की समस्या:** अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन और विश्व बैंक के आंकड़ों के अनुसार, भारत में महिला श्रम बल की भागीदारी दर 1990 में 34.8 प्रतिशत से घटकर 2013 में 27 प्रतिशत हो गई है। भारत महिलाओं की भागीदारी के बिना जनसांख्यिकीय लाभांश (Demographic Dividend in Hindi) पर कब्जा करने की उम्मीद नहीं कर सकता।
- ❖ **अनौपचारिक क्षेत्र:** भारत के जनसांख्यिकीय संक्रमण के लाभों को प्राप्त करने में एक और बाधा देश की अनौपचारिक अर्थव्यवस्था है। लगभग 216 मिलियन लोग कृषि में काम करते हैं, ज्यादातर अनौपचारिक अर्थव्यवस्था में जहां वे न केवल कम वेतन कमाते हैं, बल्कि सीमित सामाजिक सुरक्षा और प्रति वर्ष केवल कुछ दिन काम करते हैं।
- ❖ गैर-औद्योगिकीकरण, वैश्वीकरण, चौथी औद्योगिक क्रांति और तकनीकी नवाचार के कारण, भविष्य में विकास बेरोजगार होने की चिंता बढ़ रही है। एनएसएसओ आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण 2017-18 के अनुसार, 15-59 वर्ष की आयु सीमा के लिए भारत की श्रम शक्ति भागीदारी दर लगभग 53% है,
- ❖ जिसका अर्थ है कि कामकाजी आयु की लगभग आधी आबादी बेरोजगार है।
- ❖ **मानव पूंजी में सुधार:** भारत के स्नातको और स्नातकोत्तरों में खराब मानव पूंजी निर्माण के कारण रोजगार की क्षमता कम है। एसोचौम के अनुसार, मुश्किल से 20-30% इंजीनियरों को ऐसा काम मिलता है जो उनकी क्षमताओं से मेल खाता हो। नतीजतन, मानव पूंजी और कौमाल की कमी एक महत्वपूर्ण चिंता का विषय है।
- ❖ यूएनडीपी के मानव विकास सूचकांक में भारत 189 देशों में 130वें स्थान पर है, जो कि चिंताजनक है। जन्म के समय भारत की जीवन प्रत्याशा (68 वर्ष) अन्य उभरते देशों की तुलना में काफी कम है। स्कूल में बिताए गए वर्षों की औसत संख्या और स्कूल में बिताए गए वर्षों की अनुमानित संख्या दोनों को बढ़ाने की आवश्यकता है।
- सुधारात्मक उपाय**
- ❖ **रोजगार सृजन:** कार्यबल में युवा लोगों की आमद को अवशोषित करने के लिए देश को प्रति वर्ष दस मिलियन नौकरियों का उत्पादन करने की आवश्यकता है।
- ❖ कॉर्पोरेट हितों और उद्यमिता को बढ़ावा देने से नौकरी के विकास में मदद मिलेगी, जिससे विशाल श्रम शक्ति को क खोजने में मदद मिलेगी।
- ❖ विश्व बैंक के ईज ऑफ कूडिंग बिजनेस इंडेक्स में भारत की रेटिंग में सुधार उत्साहजनक है।
- ❖ यदि सही ढंग से क्रियान्वित किया जाता है, तो स्टार्ट अप इंडिया और मेक इन इंडिया जैसे कार्यक्रम निकट भविष्य में अपेक्षित परिणाम देंगे।
- ❖ **शहरीकरण:** आने वाले वर्षों में, युवा और कामकाजी आबादी का एक बड़ा हिस्सा अपने और अन्य राज्यों के शहरी क्षेत्रों में प्रवास करेगा, जिसके परिणामस्वरूप शहरी आबादी का तेजी से और व्यापक विस्तार होगा।

- ❖ शहरी नीति नियोजन का फोकस इस बात पर होना चाहिए कि कैसे ये गतिशील व्यक्ति शहरी परिवेश में बुनियादी सुविधाएं, स्वास्थ्य और सामाजिक सेवाएं प्राप्त कर सकते हैं।
- ❖ उदाहरण के लिए स्मार्ट सिटी मिशन और अमृत को सफलतापूर्वक और सावधानी से क्रियान्वित किया जाना चाहिए।
- ❖ स्वास्थ्य देखभाल, उत्कृष्ट शिक्षा, नौकरियों और कौशल के माध्यम से मानव पूंजी में निवेश करने से मानव पूंजी उत्पन्न करने में मदद मिलती है, जो आर्थिक विकास का समर्थन करने, अत्यधिक गरीबी को कम करने और अधिक समावेशी समाज को बढ़ावा देने के लिए आवश्यक है।
- ❖ कौशल विकास के माध्यम से युवा आबादी की रोजगार क्षमता में वृद्धि करना। आधुनिक अर्थव्यवस्था में प्रतिस्पर्धा करने के लिए भारत के कार्यबल को आवश्यक कौशल से लैस होना चाहिए।
- ❖ राष्ट्रीय कौशल विकास निगम (NSDC) की स्थापना सरकार ने 2022 तक भारत में 500 मिलियन व्यक्तियों को कौशल या अपस्किल करने के लक्ष्य के साथ की थी।
- ❖ **शिक्षा:** शिक्षा के स्तर में सुधार के लिए प्राथमिक, माध्यमिक और उच्च शिक्षा में उचित निवेश करना।
- ❖ भारत, जिसकी जनसंख्या का लगभग 41% 20 वर्ष से कम आयु का है। जनसांख्यिकीय लाभांश (Demographic Dividend in Hindi) से तभी लाभान्वित हो सकता है जब वह अपनी शिक्षा प्रणाली में सुधार करे।
- ❖ आधुनिक उद्योग की मांगों को अकादमिक सीखने के स्तर के साथ संरेखित करने के लिए अकादमिक उद्योग सहयोग की भी आवश्यकता है।
- ❖ उच्च शिक्षा वित्त एजेंसी (एचईएफए) का निर्माण सही दिशा में एक कदम है।
- ❖ **स्वास्थ्य:** स्वास्थ्य सुविधाओं में सुधार से युवा श्रमिकों को अधिक समय तक काम करने की अनुमति मिलेगी, जिससे अर्थव्यवस्था का उत्पादन बढ़ेगा।
- ❖ आयुष्मान भारत और राष्ट्रीय स्वास्थ्य सुरक्षा योजना (एनएचपीएस) का सफल होना बेहद जरूरी है।
- ❖ समेकित बाल विकास (आईसीडीएस) कार्यक्रम के प्रभावी क्रियान्वयन के साथ महिलाओं और बच्चों के पोषण स्तर पर भी विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।
- ❖ सुशासन नागरिकों की भागीदारी, अच्छी तरह से काम करने वाली संस्थाओं, कानून के शासन के लिए सम्मान, भ्रष्टाचार के निम्न स्तर, संपत्ति के अधिकारों के लिए सम्मान, अनुबंधों की पवित्रता आदि के लिए प्रभावी चौनल प्रदान करके सभी के लिए उचित अवसर प्रदान करता है।
- ❖ **श्रम कानूनों में सुधार:** भारत के जनसांख्यिकीय लाभांश (Demographic Dividend in Hindi) का पूरी तरह से उपयोग करने के लिए, श्रम और भूमि कानूनों को प्रारूपित किया जाना चाहिए, साथ ही वर्तमान में संघर्षरत क्षेत्रों के विकास को बढ़ावा देने के लिए पहल का समर्थन करना चाहिए।

भारत में हाल के जनसांख्यिकीय रुझान

- ❖ भारत में सबसे कम आयु वर्ग की आबादी है। 2022 में भारत की औसत आयु 28 वर्ष होगी, जबकि चीन और संयुक्त राज्य अमेरिका में 37, पश्चिमी यूरोप में 45 और जापान में 49 की तुलना में।
- ❖ वर्तमान में भारत की कामकाजी उम्र की जनसंख्या नाटकीय रूप से घटती जन्म दर के कारण बढ़ रही है, हमारी औसत वार्षिक जनसंख्या वृद्धि दर 1970 के दशक की तुलना में हाल के दशक में व्यावहारिक रूप से आधी हो गई है।
- ❖ भारत की कुल प्रजनन दर (टीएफआर) में क्रमिक गिरावट, जो प्रति महिला या बच्चों के जन्म की संख्या है जो प्रजनन आयु की महिला से पैदा होने का अनुमान है। इस प्रवृत्ति का मुख्य चालक रहा है। विलचस्प बात यह है कि भारत का टीएफआर 22 है, जो वैश्विक टीएफआर 2.4 से थोड़ा कम है।
- ❖ हालांकि 1990 के बाद से कुल प्रजनन दर में आधे से कमी आई है, लेकिन बिहार, मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश जैसे राज्यों में 2.5 तक के उच्च टीएफआर और दिल्ली, महाराष्ट्र जैसे राज्यों में 1.5 के निचले टीएफआर के साथ महत्वपूर्ण अंतरराज्यीय भिन्नता है।
- ❖ भारत सरकार के एक मंत्री ने कहा है कि भारत के जनसांख्यिकीय लाभांश (कमउवहतंचीपब क्पअपकमदक पद भ्पदकप) में एक आत्मनिर्भर भारत स्थापित करने की क्षमता है।
- ❖ राष्ट्रीय आंकड़ों की तुलना में बिहार की गरीबी दर लगातार ऊंची बनी हुई है। हैरानी की बात है कि 2018 के वैश्विक बहुआयामी गरीबी सूचकांक के अनुसार बिहार की आधी से अधिक आबादी को बहुआयामी गरीबी के रूप में वर्गीकृत किया गया है।
- ❖ बहुप्रचारित जनसांख्यिकीय लाभांश (Demographic Dividend in Hindi) तभी प्राप्त किया जा सकता है जब युवा आबादी स्वस्थ और शिक्षित हो।
- ❖ **आगे बढ़ने का रास्ता**
- ❖ यदि नीति निर्माता विकासात्मक नीतियों को इस जनसांख्यिकीय बदलाव से जोड़ते हैं, तो भारत एक जनसांख्यिकीय संक्रमण के दाईं ओर होगा जो तेजी से सामाजिक-आर्थिक विकास के लिए एक शानदार अवसर पेश करेगा।
- ❖ जनसांख्यिकीय लाभांश (Demographic Dividend in Hindi) से लाभ उठाने के लिए शिक्षा, कौशल विकास और स्वास्थ्य सुविधाओं पर जोर देने के साथ पर्याप्त मानव पूंजी निवेश की आवश्यकता है।
- ❖ यह जनसांख्यिकीय बदलाव अपने साथ कई बाधाएं भी लेकर आता है। हम एक जनसांख्यिकीय संकट का सामना कर रहे होंगे यदि बढ़े हुए कार्यबल उचित रूप से कुशल, शिक्षित और लाभकारी रोजगार प्रदान नहीं करते हैं।
- ❖ हम जापान और कोरिया जैसे देशों से वैश्विक विचारों से सीखकर और स्वदेशी चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए समाधान तैयार करके जनसांख्यिकीय लाभांश (Demographic Dividend in Hindi) से लाभ उठा सकते हैं।